International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(4): 71-72

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(4): 71-72
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-05-2017
Accepted: 13-06-2017

प्रेम सिंह
शोधार्थी (पी.एच.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Correspondence
प्रेम सिंह
शोधार्थी (पी.एच.डी.), संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वैदिक धर्म के लक्षण

प्रेम सिंह

प्रस्तावना

धर्म एक सर्वव्यापक एवं सर्वकालिक शब्द है। यह शब्द वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल पर्यन्त सर्वत्र अपने भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता आया है। यह शब्द अनेक युगों एवं विपर्ययों के चक्र में घुम चुका है। धर्म शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में मिलता है। [1] इस शब्द का सर्वत्र प्रयोग एक ही लिंग में नहीं हुआ है; अपितु सर्वत्र भिन्न–भिन्न लिंगों में हुआ है। [2]

'धर्म' शब्द की निष्पत्ति "धृ" धातु से "मन्" प्रत्यय के संयोग से होती है जिसका अर्थ है–धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना। [3] संस्कृत के मर्मज्ञ विद्वानों ने धर्म की परिभाषाएँ बहुत ही सुन्दर ड़ंग से दी हैं। डॉ.वी.एस.आप्टे धर्म की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि जिसके द्वारा लोक धारण किया जाता है अथवा जिसे लोक धारण करता है धर्म कहलाता है। [4] महर्षि वेदव्यास के अनुसार धर्म ही प्रजा को धारण करता है और धारण करने के कारण ही उसे धर्म कहते हैं। इसलिए जो धारण–प्राण रक्षा से युक्त हो–जिसमें किसी भी जीव की हिंसा न की जाती हो, वही धर्म है। [5] महर्षि कणाद धर्म की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि जिससे अभ्युदय (इहलौकिक) और निःश्रेयस (पारलौकिक सुख) की सिद्धि होती है वह 'धर्म' है [6] और धर्म विशेष से ही समस्त संसार की उत्पत्ति हुई है। [7] महर्षि कणाद ने धर्म की जो परिभाषा दी है वह वैदिक धर्म के ज्यादा समीप है। उपर्युक्त परिभाषाओं यह सिद्ध हो जाता है कि सम्पूर्ण संसार के प्राणी जिसे सम्पूर्ण प्राणियों के कल्याण के लिए धारण करें, वह धर्म है। विश्व में जितनी भी सत्य शक्तियाँ हैं और जितने भी ज्ञान–विज्ञान से युक्त नियम एवं मृत्यु से मुक्त करके जीवन या अमृत प्रदान करने वाले साधन हैं, वे सब धर्म रूप हैं। धर्म मानव कृत नहीं है अपितु मानव स्वयं धर्म कृत है। धर्म शक्तियाँ ऋत के द्वारा प्रतिष्ठित होती हैं। प्रकृति में जो ऋत नियम काम करते हैं, उन्हें भौतिक शक्तियाँ कहा जाता है और जो नियम मानव जीवन में काम करते हैं ,उन्हें आध्यात्मिक या धर्म की शक्तियाँ कहते हैं। वैदिक धर्म प्रकृति का धर्म है और प्रकृति का धर्म सनातन सत्ता है। इसलिए वैदिक धर्म को सनातन धर्म [8] और सत्य धर्म [9] के नाम से भी अभिहित किया जाता है। सनातन धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी पर व्याप्त समस्त धर्मों एवं मत–मतान्तरों में प्रथम और प्राचीन है। [10] वैदिक धर्म मूर्ति पूजा पर आधारित नहीं है। अपितु यज्ञादि के द्वारा प्राकृतिक शक्तियों के स्तवन पर आधारित है। [11]

वेदों में जो वैदिक धर्म के लक्षण कहे गये हैं, जनसाधारण के द्वारा उनको समझना अत्यधिक दुसाध्य कार्य है। इस दुसाध्य कार्य को ससाध्य, सुखकर एवं सुविज्ञेय बनाने के लिए परमतत्त्व के द्रष्टा ऋषियों ने वेदों के ज्ञान पर आधारित धर्मशास्त्रों का प्रणयन किया। धर्मशास्त्रों की संख्या सर्वत्र भिन्न–भिन्न कही गई है। परन्तु सभी स्मृतियों में मनुस्मृति को प्रथम स्थान पर निरूपित किया गया है। [12] बृहस्पति और अंगिरा का कथन है कि जो स्मृति मनुस्मृति के विपरीत हो वह प्रामाणिक नहीं है। [13] महर्षि मनु ने जो कुछ भी कहा है वह वेदों पर आधारित है। [14] महर्षि मनु ने वेदों में वर्णित बिखरे हुए धर्म के लक्षणों को संगृहित कर उन्हें दस भागों में विभाजित किया। [15] महर्षि मनु प्रोक्त धर्म के ये दस लक्षण हैं:–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।। मनु. 6/91।

अर्थात् 1. धैर्य, 2. क्षमा, 3. दम (मानस नियन्त्रण), 4. अस्तेय (चौर्य कर्म से रहित), 5. शौच (मन–वचन–कर्म में शुचिता), 6. इन्द्रिय निग्रह, 7. धी (शास्त्र–ज्ञान), 8. विद्या (ब्रह्म–ज्ञान), 9. सत्य (सत्य–वाचन करना), 10. अक्रोध (क्रोधित नहीं होना) ये धर्म के दस लक्षण हैं। महर्षि मनु ने संसार के सभी जनों से धर्म के इन नियमों को नियमित पालन करने की भी शिक्षा दी है।

है। इन नियमों के पालन से मानव को परम गति की प्राप्ति होती है। [16] वैदिक धर्म के लक्षण चार कसौटियों [17] एवं तीन धर्म स्कन्धों [18] पर आश्रित थे। इनके अभाव में वैदिक धर्म अपूर्ण ही रहता था। दान और यज्ञ की संस्था वैदिक धर्म के विशिष्ट अंग थे। वैदिक धर्म में बहुदेवतावादी यज्ञों का प्राधान्य था। यज्ञ में देवों की मान्यता प्राकृतिक शक्तियों के साथ संयुक्त थी। इस प्रकार वैदिक धर्म के दस लक्षण दान, यज्ञादि के द्वारा सिद्धि को प्राप्त होते थे।

निष्कर्षः– धर्म के विषय में सर्वत्र कहा जाता रहा है कि सत्यं वद धर्मं चर [19], स्वधर्मे प्रतिपद्यस्व [20], वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मं [21], धर्मसारमिदं जगत् [22], न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते [23] आदि परन्तु इन समस्त धर्म–तथ्यों का आदि स्रोत वेद ही हैं। वेदों से धर्म–तत्त्व का ज्ञान प्राप्त होता है। वेद वैदिक धर्म के मूल हैं। [24] वेद और शास्त्र में धर्माचरण के जितने भी नियम बताये गये हैं निस्सन्देह वे सभी प्रामाणिक और निर्विवाद हैं। इन्हीं नियमों ने धर्म का रूप धरण किया। [25] निष्कर्षतः कह सकते है कि वैदिक धर्म प्राकृतिक लीलाओ्रे का सुन्दर दृश्य मानव जगत् के लिए प्रस्तुत करता था।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. अतो धर्माणि धारयन्। ऋग्वेद 1/22/18।
   तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ऋग्वेद 10/90/16।
2. सनता धर्माणि। ऋग्वेद 3/3/1।
   प्रथमा धर्माः। ऋग्वेद 3/17/1।
   पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम्। ऋग्वेद 1/181/1।
   शुक्ल यजुर्वेद 34/7।
   इममंजस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम्। ऋग्वेद 10/21/3।
3. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी. वी. काणे, अध्याय 1, पृ.1।
4. संस्कृत हिन्दी कोश, वी.एस.आप्टे, पृ.496।
5. धारणाद् धर्ममित्याहुर्धर्मो धरयते प्रजाः।
   यत् स्याद् धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।। महाभारत, वेदव्यास, कर्णपर्व, 69/58।
6. यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। वैशेषिक दर्शन, कणाद, 1/1/2।
7. धर्मविशेषप्रसूताद्। वैशेषिक दर्शन, कणाद, 1/1/3।
8. सनता धर्माणि। ऋग्वेद 3/3/1।
9. सत्यधर्मा। ऋग्वेद 10/121/9।
10. (क) प्रथमा धर्माः। ऋग्वेद 3/17/1।
    (ख) धर्मं पुराणम्। अथर्ववेद 18/3/1।
    (ग) सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात्पुनर्णवः। अथर्ववेद10/8/23।
11. अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास। ऋग्वेद 5/83/1।,
    तस्मै वाताय हविषा विधेम। ऋग्वेद10/168/4।
12. (क) मन्वत्रि– विष्णु–हारीत.....। या.स्मृति. 1/4–5।
    (ख) श्रुता मे मानवा धर्माः ....। पराशरस्मृति 1/12–16।
    (ग) मनुर्विष्णुर्याज्ञवल्क्यो.....। अग्निपुराण 162/1–2।
    (घ) तेषां मन्वगिंरो–व्यास.....। स्मृति–चन्द्रिका पृ. 1, वी.मि.परि. प्र. पृ.15।
13. (क) वेदार्थ–प्रतिबद्धत्वात् प्रामाण्यन्तु मनोः स्मृतम्।
    मन्वर्थ–विपरीता तु या स्मृतिः सा न शस्यते।। बृ.स्मृ.सं. का. श्लो. 13। R.K.Agarwala: Hindu Law. P-18, 23ed. C.L.A. Allahabad-2011.
    (ख) यत्पूर्वं मनुना प्रोक्तन्धर्म–शास्त्रमनुत्तमम्।
    न हि तत्समतिक्रम्य वचनं हितमात्मनः।। अंगिरा स्मृ.।
    Dr. Jha: Hindu Law in its sorrcess. P.44, C.L.A. Allahabad-2011.
14. यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परिकीर्तिताः।
    सः सर्वोऽभिहितो वेदे.....।। मनु. 2/7।
15. (क) धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
    धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।। मनु. 6/91।
    (ख) महर्षि याज्ञवल्क्य ने धर्म के नौ लक्षण बतायें हैं।
    अहिंसा सत्यमस्तेयं शैचमिन्द्रिय–निग्रहः।
    दानं धर्मो दया क्षान्तिः सर्वेषान्धर्म–साधनम्।। या.स्मृ. 1/122।
16. (क) दश लक्षणानि धर्मस्य ये विप्राः समधीयते।
    अधीत्य चानुवर्तन्ते ते यान्ति परमां गतिम्।। मनु. 6/92।
    (ख) श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः।
    इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।। मनु. 2/9।
17. वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
    एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।। मनु. 2/11।
18. त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानम्। छान्दोग्य उप. 2/23/1।
19. तैत्तिरीय उप. 1/11/3।
20. वाल्मीकि रा. 1/21/7।
21. महाभारत उ.प. 35/58।
22. वाल्मीकि रा. 3/9/30।
23. कुमार. 5/16।
24. वेदोऽखिलो धर्ममूलं। मनु.2/6।
25. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।
    ते सर्वार्थेष्वमीमांस्ये ताभ्यां धर्मो हि निर्बभौ।। मनु. 2/10।